मन की बात

खंड. 11

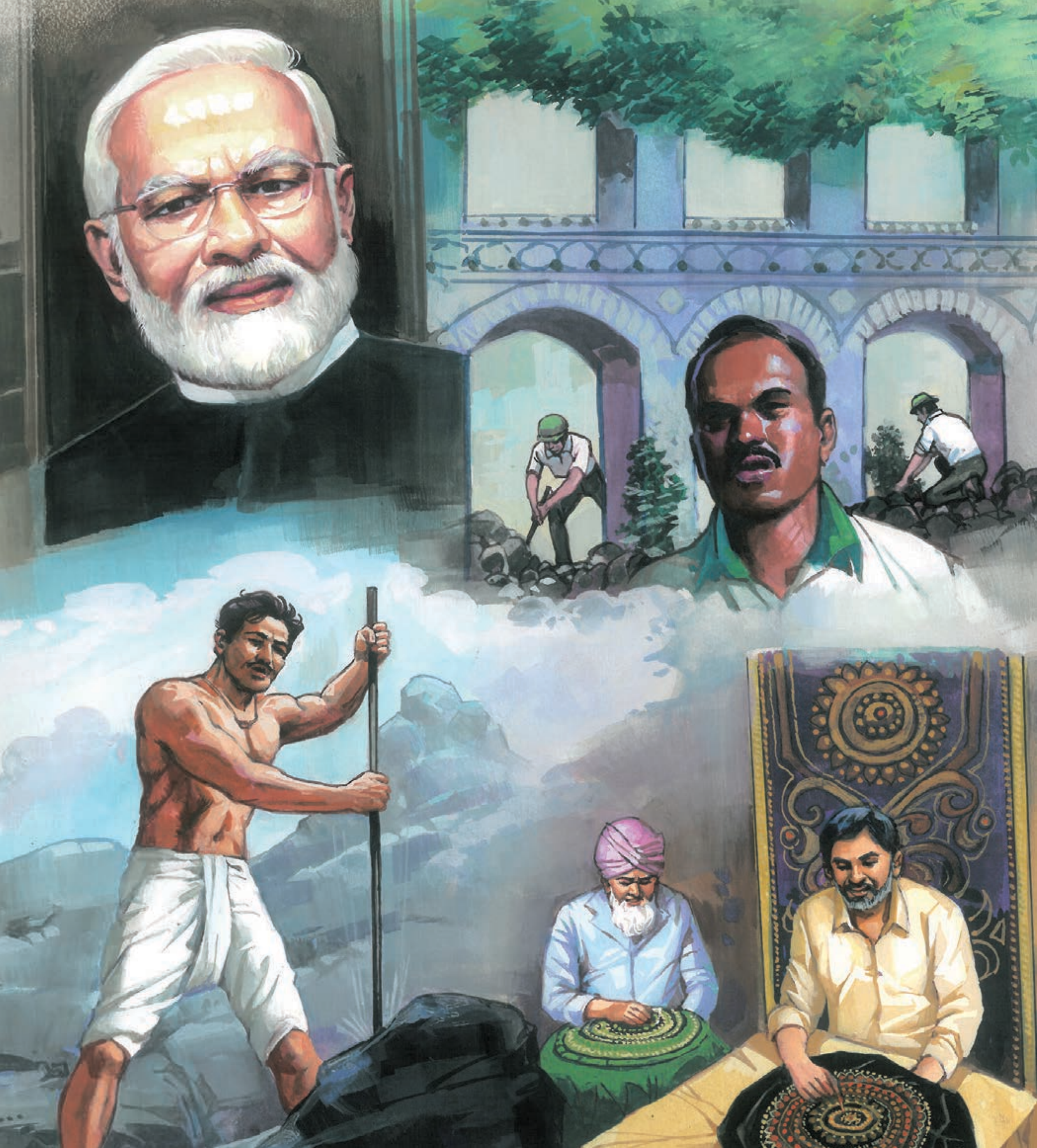

MANN KI BAAT
VOL.11

Illustrations and Cover Art
Dilip Kadam

Assistant Artist
Ravindra Mokate

Production
Amar Chitra Katha

Colourists
Prakash Sivan, Prajeesh V. P. and M. P. Rageeven

Layout Artist
Akshay Khadilkar

Published by
Amar Chitra Katha Pvt. Ltd

HINDI

ISBN – 978-93-6127-636-1

Amar Chitra Katha Pvt. Ltd, February 2024

© Ministry of Culture, Govt of India, February 2024
All rights reserved. This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

You can now get ACK stories as part of your classroom with **ACK Learn**, a unique learning platform that brings these stories to your school with a range of workshops. Find out more at **www.acklearn.com** or write to us at **acklearn@ack-media.com**.

मेरे प्यारे बच्चों,

हमारी संस्कृति ने हमेशा "माता, पिता, गुरू, दैवम्" की कहावत में विश्वास किया है।

एक तमिल शिक्षिका, एन. के. हेमलता ने इसे चरितार्थ किया है। कोविड-19 महामारी के समय, जब स्कूल बन्द थे, तब हेमलता जी ने पाठ के एनिमेटेड वीडियो बनाकर अपने विद्यार्थियों में बाँटे।

इसी तरह संथाली के प्रोफ़ेसर, श्रीपति टूडू हैं। महीनों के शोध के बाद, श्रीपति जी ने हमारे संविधान का संथाली में अनुवाद किया। अंततः अब, बहुत से संथाली लोग अपने अधिकारों के बारे में पढ़ सकते हैं – एक ऐसी चीज़ है जो मैं प्रत्येक भारतीय के लिए चाहता हूँ।

लेकिन हर महान टीचर कक्षा में ही नहीं पाया जाता।

एक रोगन कलाकार, अब्दुल गफ़ूर खत्री ने कपड़े पर पेंटिंग की इस प्राचीन कला में 200 से अधिक लड़कियों को प्रशिक्षित किया है, जिससे उन्हें इस ऐतिहासिक रूप से पुरुष प्रधान क्षेत्र में स्थान मिला है। इसी प्रकार नागालैंड की लिडी क्रोऊ सोसायटी अगली पीढ़ी के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करके नागा परंपराओं को बचाना चाहती है।

जैसा कि गाँधीजी ने कहा था, "एक मोमबत्ती से हज़ारों मोमबत्तियाँ रोशन की जा सकती हैं।" इसलिए लगन से सीखो और उदारतापूर्वक सिखाओ। जब तुम किसी और की मोमबत्ती जलाओगे, तो वो बदलाव की अगुवाई मशाल बन सकती है।

विषय-सूची

1	अब्दुल गफ़ूर खत्री	3
2	बन्धु धोत्रे	6
3	दैतारी नाइक	9
4	लिडि क्रोऊ सोसायटी	12
5	मार्टिना देवी	15
6	एन. के. हेमलता	17
7	माँ सरस्वती स्व-सहायता समूह	19
8	स्मार्टगाँव	22
9	सोनाली हेल्वी	25
10	श्रीपति टूडू	28
11	युवा ब्रिगेड	31

अब्दुल गफ़ूर खत्री

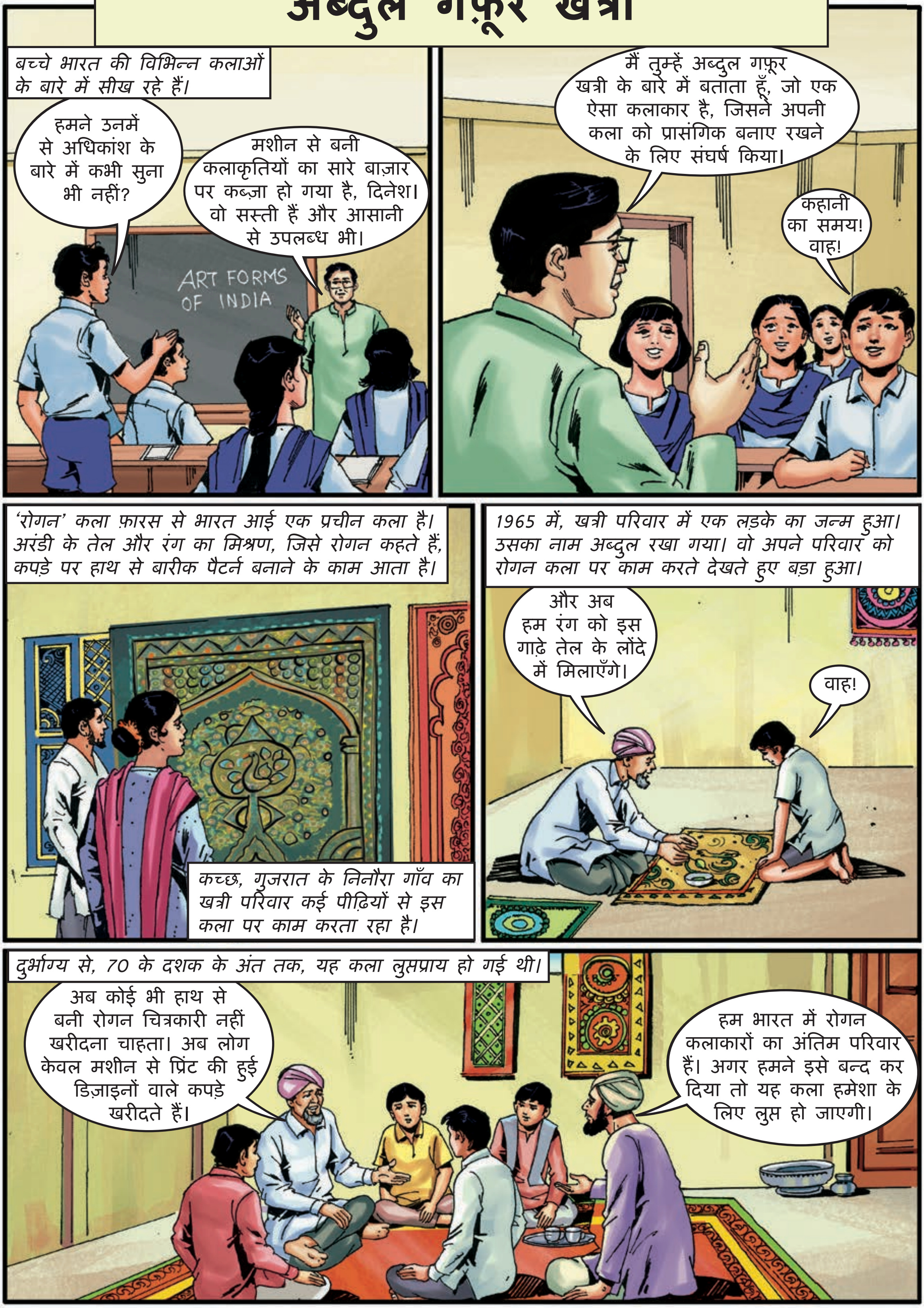

बच्चे भारत की विभिन्न कलाओं के बारे में सीख रहे हैं।
हमने उनमें से अधिकांश के बारे में कभी सुना भी नहीं?
मशीन से बनी कलाकृतियों का सारे बाज़ार पर कब्ज़ा हो गया है, दिनेश। वो सस्ती हैं और आसानी से उपलब्ध भी।
ART FORMS OF INDIA
मैं तुम्हें अब्दुल गफ़ूर खत्री के बारे में बताता हूँ, जो एक ऐसा कलाकार है, जिसने अपनी कला को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए संघर्ष किया।
कहानी का समय! वाह!
'रोगन' कला फ़ारस से भारत आई एक प्रचीन कला है। अरंडी के तेल और रंग का मिश्रण, जिसे रोगन कहते हैं, कपड़े पर हाथ से बारीक पैटर्न बनाने के काम आता है।
कच्छ, गुजरात के निनौरा गाँव का खत्री परिवार कई पीढ़ियों से इस कला पर काम करता रहा है।
1965 में, खत्री परिवार में एक लड़के का जन्म हुआ। उसका नाम अब्दुल रखा गया। वो अपने परिवार को रोगन कला पर काम करते देखते हुए बड़ा हुआ।
और अब हम रंग को इस गाढ़े तेल के लोंदे में मिलाएँगे।
वाह!
दुर्भाग्य से, 70 के दशक के अंत तक, यह कला लुप्तप्राय हो गई थी।
अब कोई भी हाथ से बनी रोगन चित्रकारी नहीं खरीदना चाहता। अब लोग केवल मशीन से प्रिंट की हुई डिज़ाइनों वाले कपड़े खरीदते हैं।
हम भारत में रोगन कलाकारों का अंतिम परिवार हैं। अगर हमने इसे बन्द कर दिया तो यह कला हमेशा के लिए लुप्त हो जाएगी।

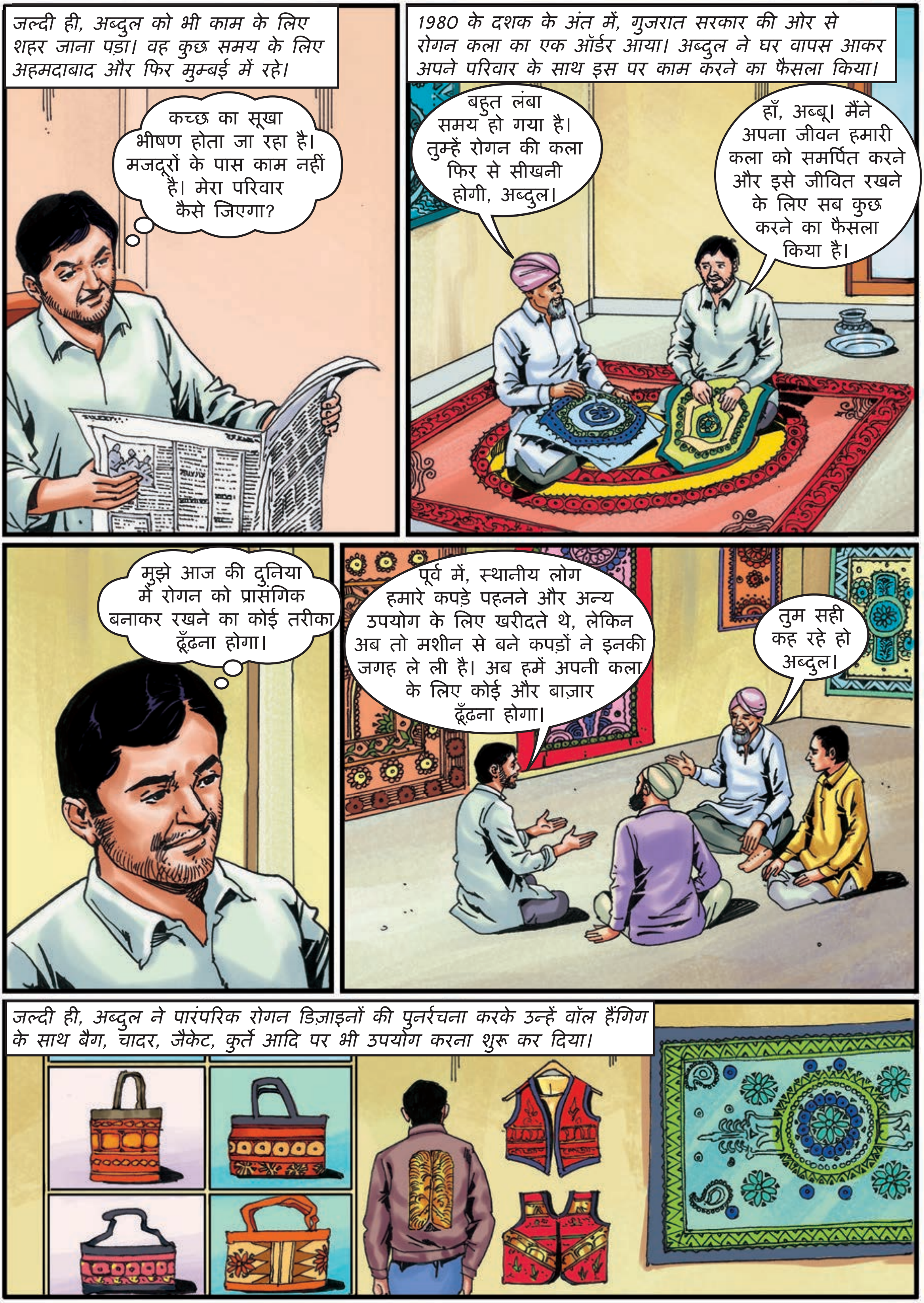
जल्दी ही, अब्दुल को भी काम के लिए शहर जाना पड़ा। वह कुछ समय के लिए अहमदाबाद और फिर मुम्बई में रहे।
कच्छ का सूखा भीषण होता जा रहा है। मजदूरों के पास काम नहीं है। मेरा परिवार कैसे जिएगा?
1980 के दशक के अंत में, गुजरात सरकार की ओर से रोगन कला का एक ऑर्डर आया। अब्दुल ने घर वापस आकर अपने परिवार के साथ इस पर काम करने का फैसला किया।
बहुत लंबा समय हो गया है। तुम्हें रोगन की कला फिर से सीखनी होगी, अब्दुल।
हाँ, अब्बू। मैंने अपना जीवन हमारी कला को समर्पित करने और इसे जीवित रखने के लिए सब कुछ करने का फैसला किया है।
मुझे आज की दुनिया में रोगन को प्रासंगिक बनाकर रखने का कोई तरीका ढूँढना होगा।
पूर्व में, स्थानीय लोग हमारे कपड़े पहनने और अन्य उपयोग के लिए खरीदते थे, लेकिन अब तो मशीन से बने कपड़ों ने इनकी जगह ले ली है। अब हमें अपनी कला के लिए कोई और बाज़ार ढूँढना होगा।
तुम सही कह रहे हो अब्दुल।
जल्दी ही, अब्दुल ने पारंपरिक रोगन डिज़ाइनों की पुनर्रचना करके उन्हें वॉल हैंगिग के साथ बैग, चादर, जैकेट, कुर्ते आदि पर भी उपयोग करना शुरू कर दिया।

नए उत्पाद बिकने लगे हैं! पर्यटकों के कारण व्यापार बहुत बढ़ रहा है।
जल्दी ही, खत्री परिवार इस कला में लोगों की रूचि बढ़ाने के लिए पर्यटकों के साथ प्रदर्शन कार्यशालाएँ और 'प्रश्नोत्तर' आयोजित करने लगा।
आज, खत्री परिवार के यहाँ प्रतिदिन 150 से अधिक अतिथि आते हैं जो रोगन कला के बारे में जानना चाहते हैं।
अब्दुल ने हमारे हस्तशिल्प को कला के स्तर तक बढ़ा दिया है। लोग फिर से हम पर ध्यान दे रहे हैं।
अपनी कला की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए, अब्दुल ने अपने गाँव की 200 से अधिक लड़कियों को प्रशिक्षित करना आरंभ किया।
तुम लड़कियों में मुझमें और मेरे भाइयों में इस उम्र में जितना धैर्य था, उसकी तुलना में बहुत अधिक धैर्य है। हाहा!
2014 में, यह कला अपनी प्रसिद्धि की ऊँचाइयों पर पहुँची, जब पीएम नरेन्द्र मोदी ने अब्दुल की रोगन चित्रकला से बनी जीवन वृक्ष को दर्शाने वाली एक पेंटिंग तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को भेंट की।
अकेले रोगन कला को पुनर्जीवित करने के लिए, अब्दुल को 2019 में पद्मश्री से पुरस्कृत किया गया।
खत्री परिवार के कई और सदस्यों को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। अब्दुल की उनके समर्पण और नवाचार के लिए पीएम मोदी द्वारा मन की बात में विशेष प्रशंसा की गई।

बन्धु धोत्रे

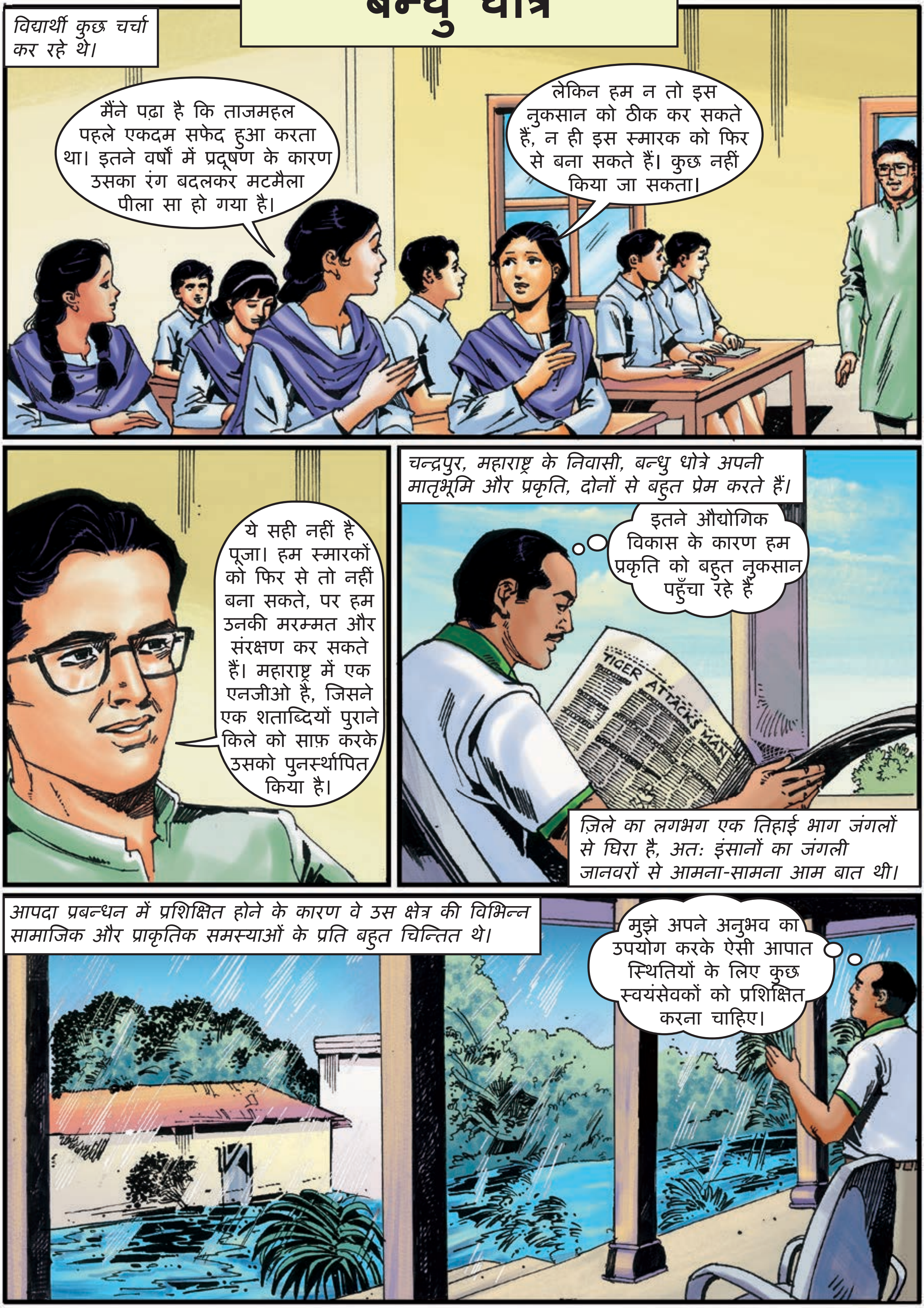

विद्यार्थी कुछ चर्चा कर रहे थे।
मैंने पढ़ा है कि ताजमहल पहले एकदम सफेद हुआ करता था। इतने वर्षों में प्रदूषण के कारण उसका रंग बदलकर मटमैला पीला सा हो गया है।
लेकिन हम न तो इस नुकसान को ठीक कर सकते हैं, न ही इस स्मारक को फिर से बना सकते हैं। कुछ नहीं किया जा सकता।
ये सही नहीं है पूजा। हम स्मारकों को फिर से तो नहीं बना सकते, पर हम उनकी मरम्मत और संरक्षण कर सकते हैं। महाराष्ट्र में एक एनजीओ है, जिसने एक शताब्दियों पुराने किले को साफ़ करके उसको पुनर्स्थापित किया है।
चन्द्रपुर, महाराष्ट्र के निवासी, बन्धु धोत्रे अपनी मातृभूमि और प्रकृति, दोनों से बहुत प्रेम करते हैं।
इतने औद्योगिक विकास के कारण हम प्रकृति को बहुत नुकसान पहुँचा रहे हैं
TIGER ATTACKS MAN
ज़िले का लगभग एक तिहाई भाग जंगलों से घिरा है, अतः इंसानों का जंगली जानवरों से आमना-सामना आम बात थी।
आपदा प्रबन्धन में प्रशिक्षित होने के कारण वे उस क्षेत्र की विभिन्न सामाजिक और प्राकृतिक समस्याओं के प्रति बहुत चिन्तित थे।
मुझे अपने अनुभव का उपयोग करके ऐसी आपात स्थितियों के लिए कुछ स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित करना चाहिए।

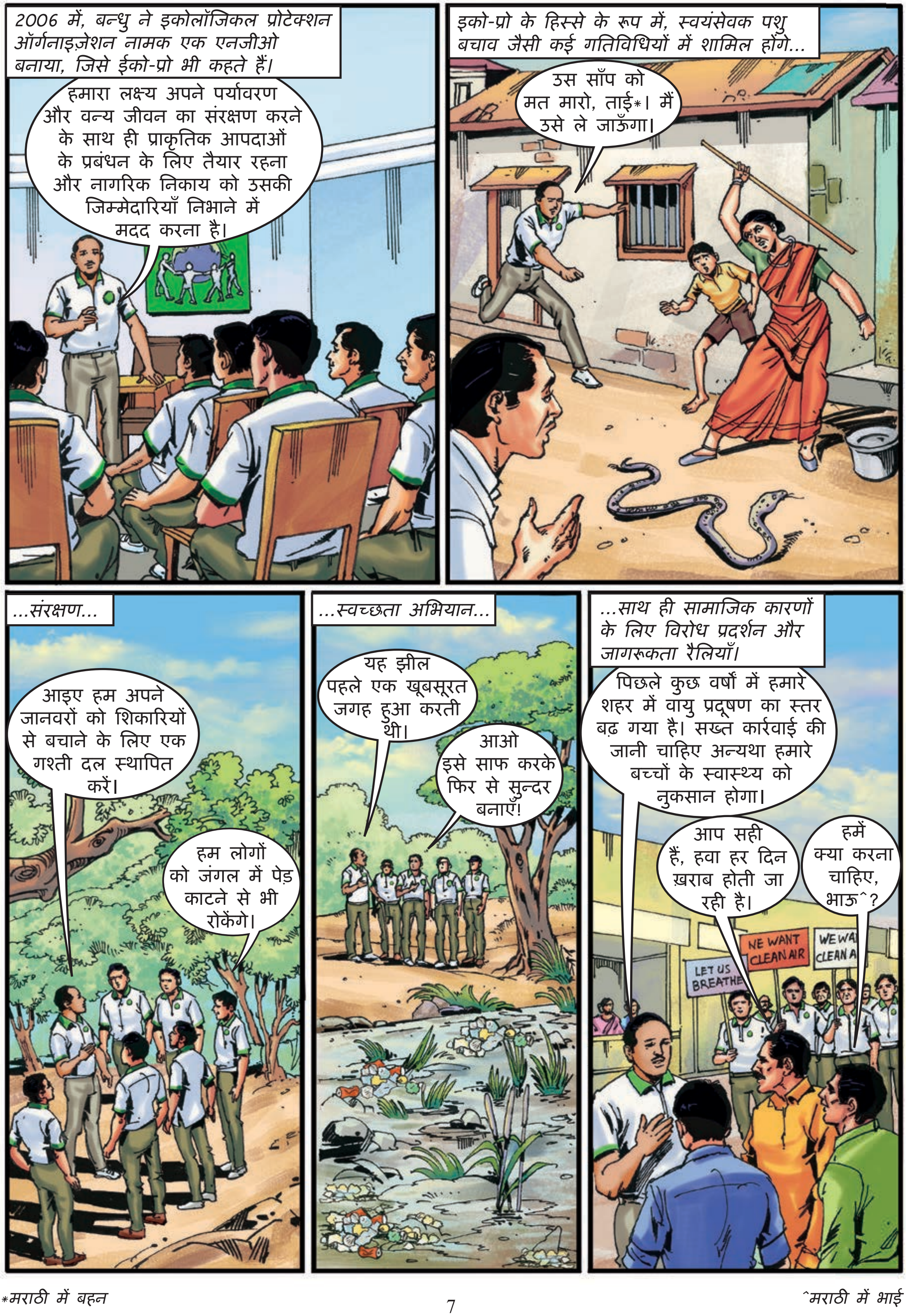

*मराठी में बहन

^मराठी में भाई

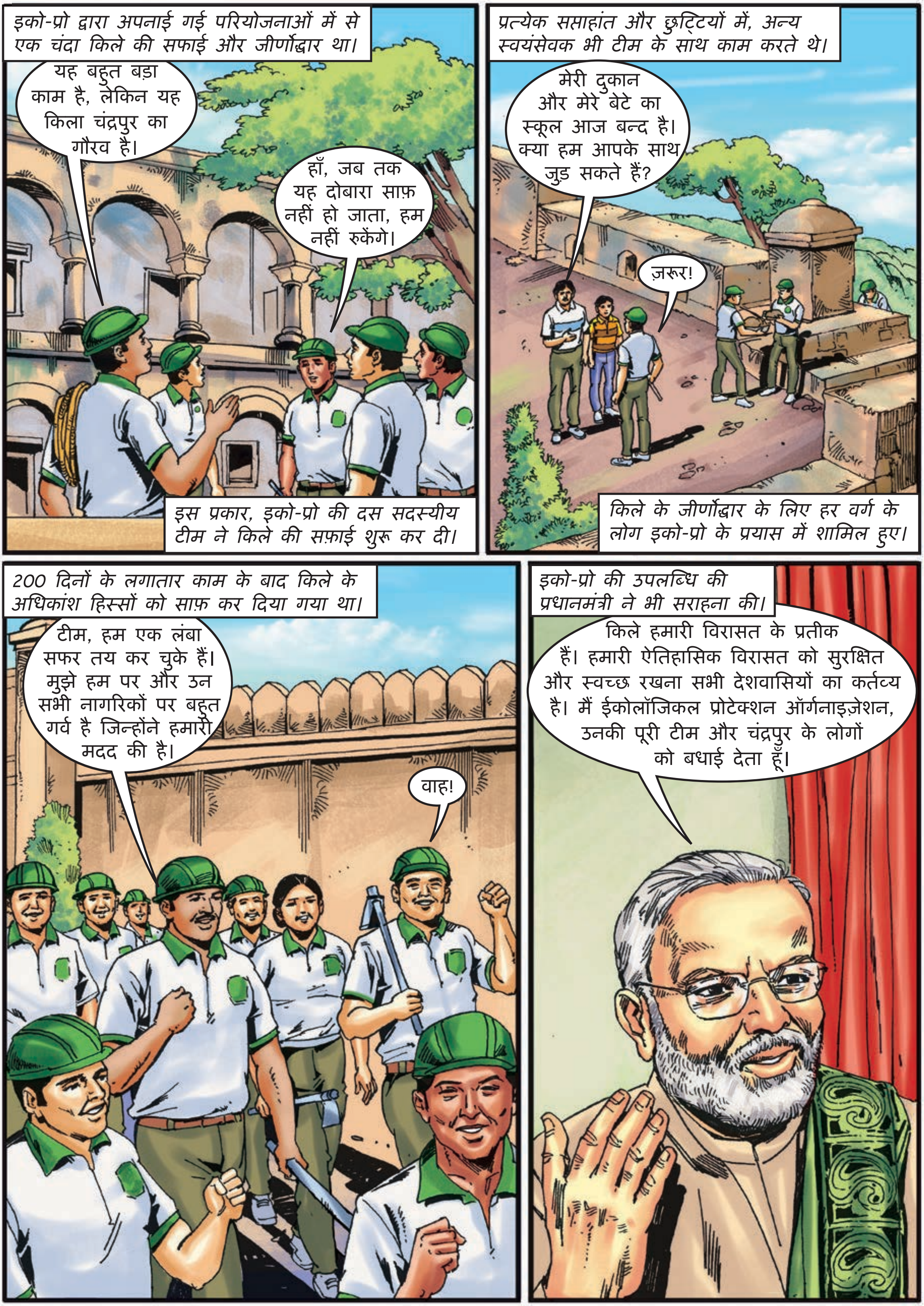
इको-प्रो द्वारा अपनाई गई परियोजनाओं में से एक चंदा किले की सफाई और जीर्णोद्धार था।
यह बहुत बड़ा काम है, लेकिन यह किला चंद्रपुर का गौरव है।
हाँ, जब तक यह दोबारा साफ़ नहीं हो जाता, हम नहीं रुकेंगे।
इस प्रकार, इको-प्रो की दस सदस्यीय टीम ने किले की सफ़ाई शुरू कर दी।
प्रत्येक सप्ताहांत और छुट्टियों में, अन्य स्वयंसेवक भी टीम के साथ काम करते थे।
मेरी दुकान और मेरे बेटे का स्कूल आज बन्द है। क्या हम आपके साथ जुड़ सकते हैं?
ज़रूर!
किले के जीर्णोद्धार के लिए हर वर्ग के लोग इको-प्रो के प्रयास में शामिल हुए।
200 दिनों के लगातार काम के बाद किले के अधिकांश हिस्सों को साफ़ कर दिया गया था।
टीम, हम एक लंबा सफर तय कर चुके हैं। मुझे हम पर और उन सभी नागरिकों पर बहुत गर्व है जिन्होंने हमारी मदद की है।
वाह!
इको-प्रो की उपलब्धि की प्रधानमंत्री ने भी सराहना की।
किले हमारी विरासत के प्रतीक हैं। हमारी ऐतिहासिक विरासत को सुरक्षित और स्वच्छ रखना सभी देशवासियों का कर्तव्य है। मैं ईकोलॉजिकल प्रोटेक्शन ऑर्गनाइज़ेशन, उनकी पूरी टीम और चंद्रपुर के लोगों को बधाई देता हूँ।

दैतारी नाइक

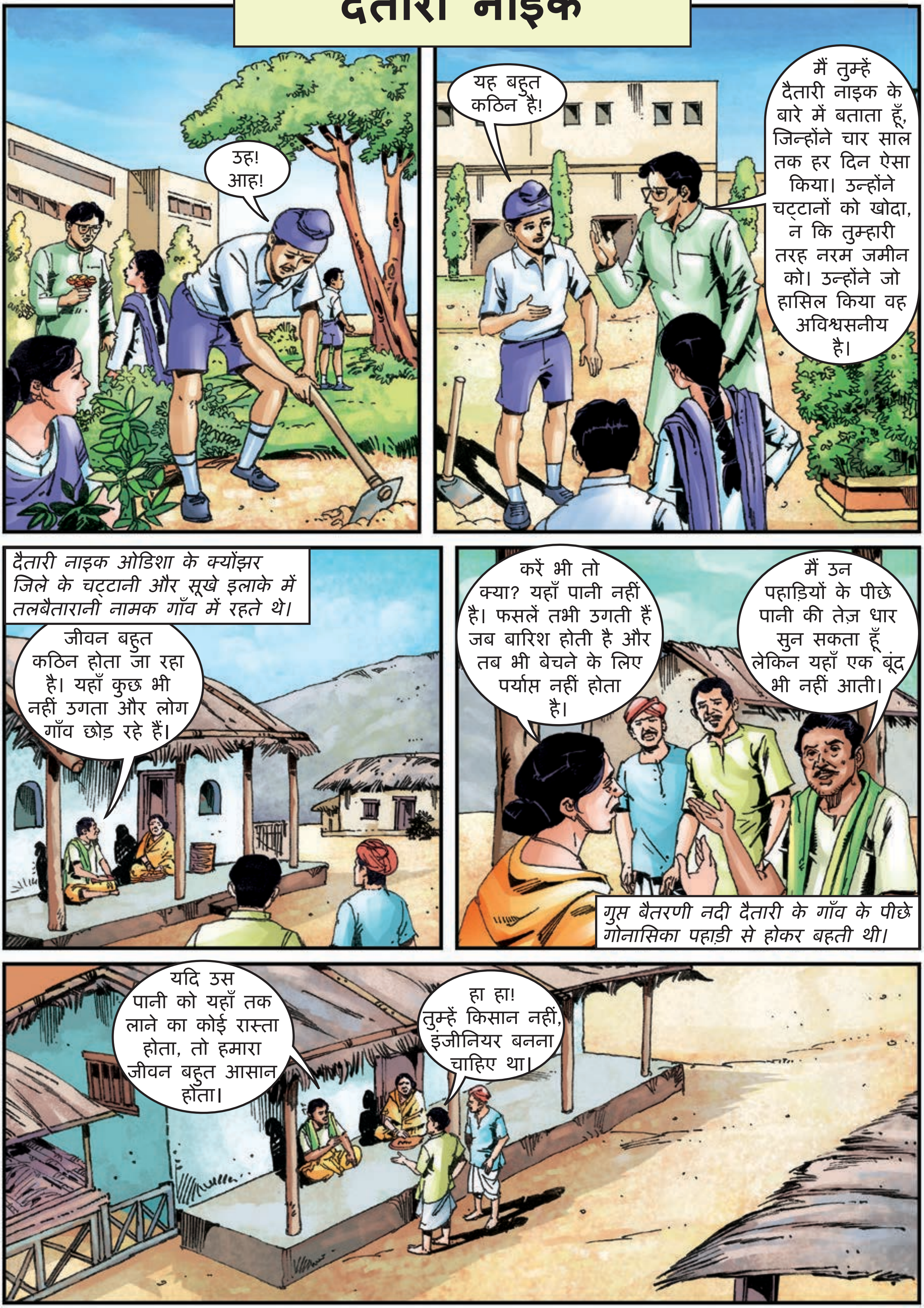
उह! आह!
यह बहुत कठिन है!
मैं तुम्हें दैतारी नाइक के बारे में बताता हूँ, जिन्होंने चार साल तक हर दिन ऐसा किया। उन्होंने चट्टानों को खोदा, न कि तुम्हारी तरह नरम जमीन को। उन्होंने जो हासिल किया वह अविश्वसनीय है।
दैतारी नाइक ओडिशा के क्योंझर जिले के चट्टानी और सूखे इलाके में तलबैतारानी नामक गाँव में रहते थे।
जीवन बहुत कठिन होता जा रहा है। यहाँ कुछ भी नहीं उगता और लोग गाँव छोड़ रहे हैं।
करें भी तो क्या? यहाँ पानी नहीं है। फसलें तभी उगती हैं जब बारिश होती है और तब भी बेचने के लिए पर्याप्त नहीं होता है।
मैं उन पहाड़ियों के पीछे पानी की तेज़ धार सुन सकता हूँ लेकिन यहाँ एक बूंद भी नहीं आती।
गुप्त बैतरणी नदी दैतारी के गाँव के पीछे गोनासिका पहाड़ी से होकर बहती थी।
यदि उस पानी को यहाँ तक लाने का कोई रास्ता होता, तो हमारा जीवन बहुत आसान होता।
हा हा! तुम्हें किसान नहीं, इंजीनियर बनना चाहिए था।

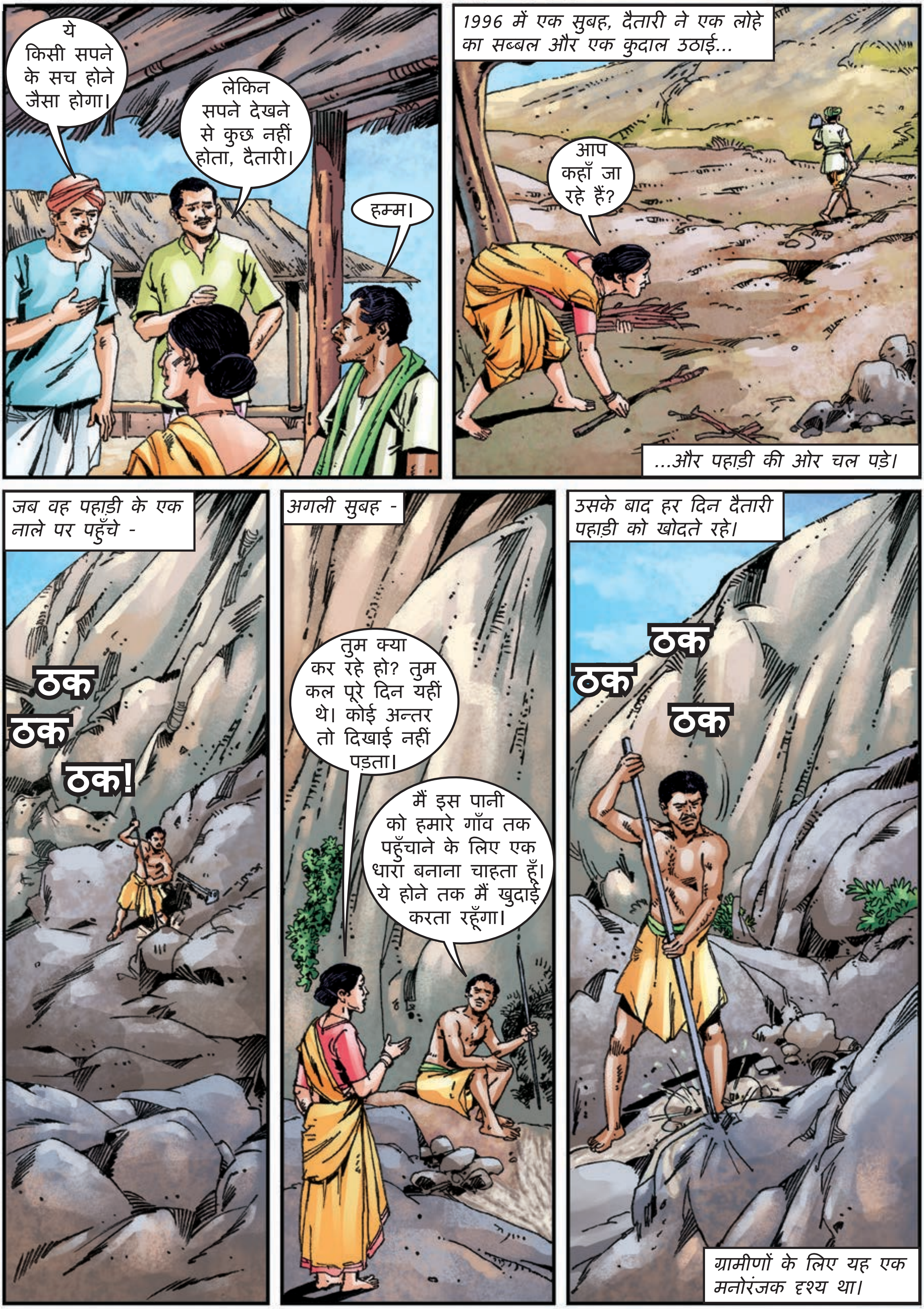
ये किसी सपने के सच होने जैसा होगा।
लेकिन सपने देखने से कुछ नहीं होता, दैतारी।
हम्म।
1996 में एक सुबह, दैतारी ने एक लोहे का सब्बल और एक कुदाल उठाई...
आप कहाँ जा रहे हैं?
...और पहाड़ी की ओर चल पड़े।
जब वह पहाड़ी के एक नाले पर पहुँचे -
ठक
ठक
ठक!
अगली सुबह -
तुम क्या कर रहे हो? तुम कल पूरे दिन यहीं थे। कोई अन्तर तो दिखाई नहीं पड़ता।
मैं इस पानी को हमारे गाँव तक पहुँचाने के लिए एक धारा बनाना चाहता हूँ। ये होने तक मैं खुदाई करता रहूँगा।
उसके बाद हर दिन दैतारी पहाड़ी को खोदते रहे।
ठक
ठक
ठक
ग्रामीणों के लिए यह एक मनोरंजक दृश्य था।

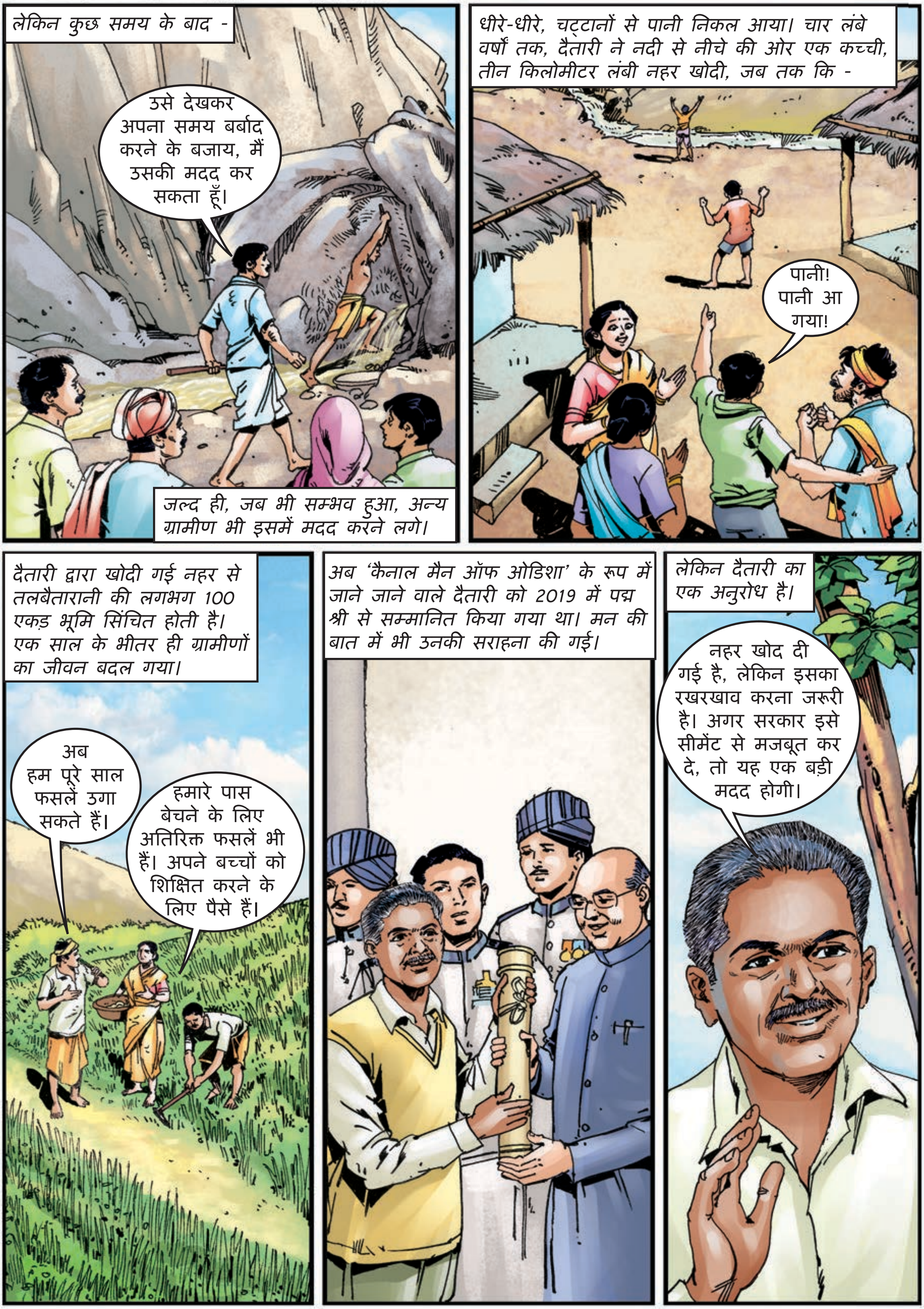
लेकिन कुछ समय के बाद -
उसे देखकर अपना समय बर्बाद करने के बजाय, मैं उसकी मदद कर सकता हूँ।
जल्द ही, जब भी सम्भव हुआ, अन्य ग्रामीण भी इसमें मदद करने लगे।
धीरे-धीरे, चट्टानों से पानी निकल आया। चार लंबे वर्षों तक, दैतारी ने नदी से नीचे की ओर एक कच्ची, तीन किलोमीटर लंबी नहर खोदी, जब तक कि -
पानी! पानी आ गया!
दैतारी द्वारा खोदी गई नहर से तलबैतारानी की लगभग 100 एकड़ भूमि सिंचित होती है। एक साल के भीतर ही ग्रामीणों का जीवन बदल गया।
अब हम पूरे साल फसलें उगा सकते हैं।
हमारे पास बेचने के लिए अतिरिक्त फसलें भी हैं। अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए पैसे हैं।
अब 'कैनाल मैन ऑफ ओडिशा' के रूप में जाने जाने वाले दैतारी को 2019 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। मन की बात में भी उनकी सराहना की गई।
लेकिन दैतारी का एक अनुरोध है।
नहर खोद दी गई है, लेकिन इसका रखरखाव करना जरूरी है। अगर सरकार इसे सीमेंट से मजबूत कर दे, तो यह एक बड़ी मदद होगी।

लिडी क्रो सोसायटी

बहुत स्वादिष्ट है! यह है क्या?
मुझे नहीं पता कि इसे क्या कहा जाता है। केवल मेरी दादी ही जानती हैं कि इसे कैसे बनाया जाता है।
तुम्हें कोशिश करके इसकी रेसिपी सीखनी चाहिए।
अपनी संस्कृति को जीवित रखने का सबसे अच्छा तरीका इसे सीखना और इसका पालन करना होता है। कोहिमा में लोगों का एक समूह युवाओं के बीच नागा संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है।
2012 में, कोहिमा -
हमारे बच्चों का अपनी संस्कृति से कोई जुड़ाव नहीं है।
हाँ, पारम्परिक कपड़ों, संगीत या भोजन में मेरे बच्चों की रुचि नहीं है।
अगर ये बातें कोई नहीं सीखेगा तो हमारी संस्कृति धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगी।
हमें इसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए कुछ करना होगा।

अपनी संस्कृति को विलुप्त होने से बचाने के लिए, महिलाओं के समूह ने लिडी क्रो सोसायटी की शुरुआत की।
LIDI KROU SOCIETY KOHIMA
सोसायटी की अधिकांश सदस्य माताएँ थीं, जो एक कॉयर ग्रुप की सदस्य थीं।
उन्होंने नागाओं के पारम्परिक तरीकों, जैसे उनकी घरेलू प्रथाओं के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले लोगों के लिए कार्यशालाएँ और कक्षाएँ आयोजित कीं...
मैं तुम्हें दिखाती हूँ कि हम चावल कैसे कूटते हैं।
...उनके व्यंजन पकाना...
अब मछली बाँस के अन्दर पकाने के लिए तैयार है।
मैंने इसे एक बार खाया था, बहुत स्वादिष्ट थी!
...उनका संगीत...
आओ इन गानों को रिकॉर्ड करके इनसे एक एल्बम बनाएँ।
शानदार आइडिया!
...उनके नृत्य...
उन्होंने इन बच्चों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया है।
सच है। मैंने अपने बचपन के बाद से अपने लोक नृत्य का इतना सुंदर प्रदर्शन नहीं देखा है।

*एक पारम्परिक नागा परिधान, जिसे आमतौर पर स्कर्ट के रूप में पहना जाता है

मार्टिना देवी

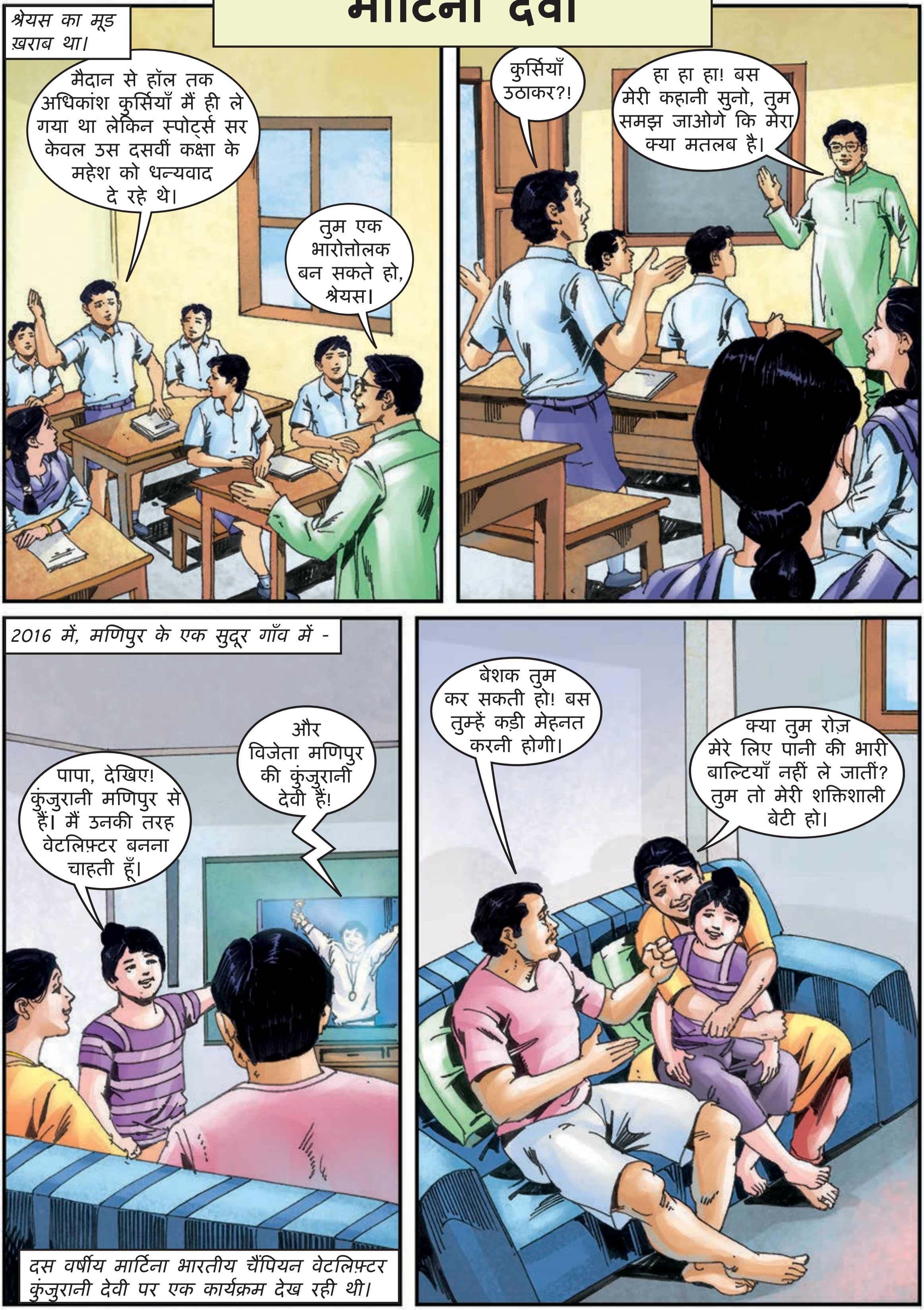

श्रेयस का मूड ख़राब था।
मैदान से हॉल तक अधिकांश कुर्सियाँ मैं ही ले गया था लेकिन स्पोर्ट्स सर केवल उस दसवीं कक्षा के महेश को धन्यवाद दे रहे थे।
तुम एक भारोत्तोलक बन सकते हो, श्रेयस।
कुर्सियाँ उठाकर?!
हा हा हा! बस मेरी कहानी सुनो, तुम समझ जाओगे कि मेरा क्या मतलब है।
2016 में, मणिपुर के एक सुदूर गाँव में -
पापा, देखिए! कुंजुरानी मणिपुर से हैं। मैं उनकी तरह वेटलिफ़्टर बनना चाहती हूँ।
और विजेता मणिपुर की कुंजुरानी देवी हैं!
दस वर्षीय मार्टिना भारतीय चैंपियन वेटलिफ़्टर कुंजुरानी देवी पर एक कार्यक्रम देख रही थी।
बेशक तुम कर सकती हो! बस तुम्हें कड़ी मेहनत करनी होगी।
क्या तुम रोज़ मेरे लिए पानी की भारी बाल्टियाँ नहीं ले जातीं? तुम तो मेरी शक्तिशाली बेटी हो।

मार्टिना के लिए उसके माता-पिता का उस पर विश्वास ही काफी था। उसने उसी वर्ष दिसंबर में प्रशिक्षण शुरू किया।
इस लड़की में बहुत क्षमता है।
हाँ, वह खेल के प्रति समर्पित भी है।
उस समर्पण के साथ-साथ भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई), लखनऊ के समर्थन और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप उन्हें कई जीतें हासिल हुईं।
आपने अकेले 2022 में भारोत्तोलन में 39 रिकॉर्ड बनाए हैं। क्या आपके पास हासिल करने के लिए कुछ बचा है?
बेशक! मुझे विश्व मंच पर जाने के लिए एक लम्बा रास्ता तय करना है लेकिन मुझे पता है कि मैं यह कर सकती हूँ।
तो, अब आगे क्या करना है?
पहले विश्व युवा चैम्पियनशिप और फिर ओलम्पिक में जाना है।
मार्टिना का खुद पर अपार आत्मविश्वास उनके अपने बयान में झलकता है।
मैं जानती हूँ कि मैं हमेशा पहले से बेहतर करूँगी।
प्रधानमंत्री मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम में उनकी उपलब्धियों की सराहना की है, यह मार्टिना की सफलता का पर्याप्त प्रमाण है।

एन.के. हेमलता

*माध्यमिक विद्यालय छोड़ने का प्रमाणपत्र, जिसे ग्रेड 10 परीक्षा के रूप में भी जाना जाता है

^तमिलनाडु का एक जिला

* सही जीवन और सही सोच के बारे में तमिल दोहों का संग्रह

माँ सरस्वती स्व-सहायता समूह

*उत्तर प्रदेश में ज़िला

^केले का पेड़ केवल एक बार फल देता है। उसके बाद, उसके तने को काट दिया जाता है और नई कोंपलों से नया पौधा बनने दिया जाता है।

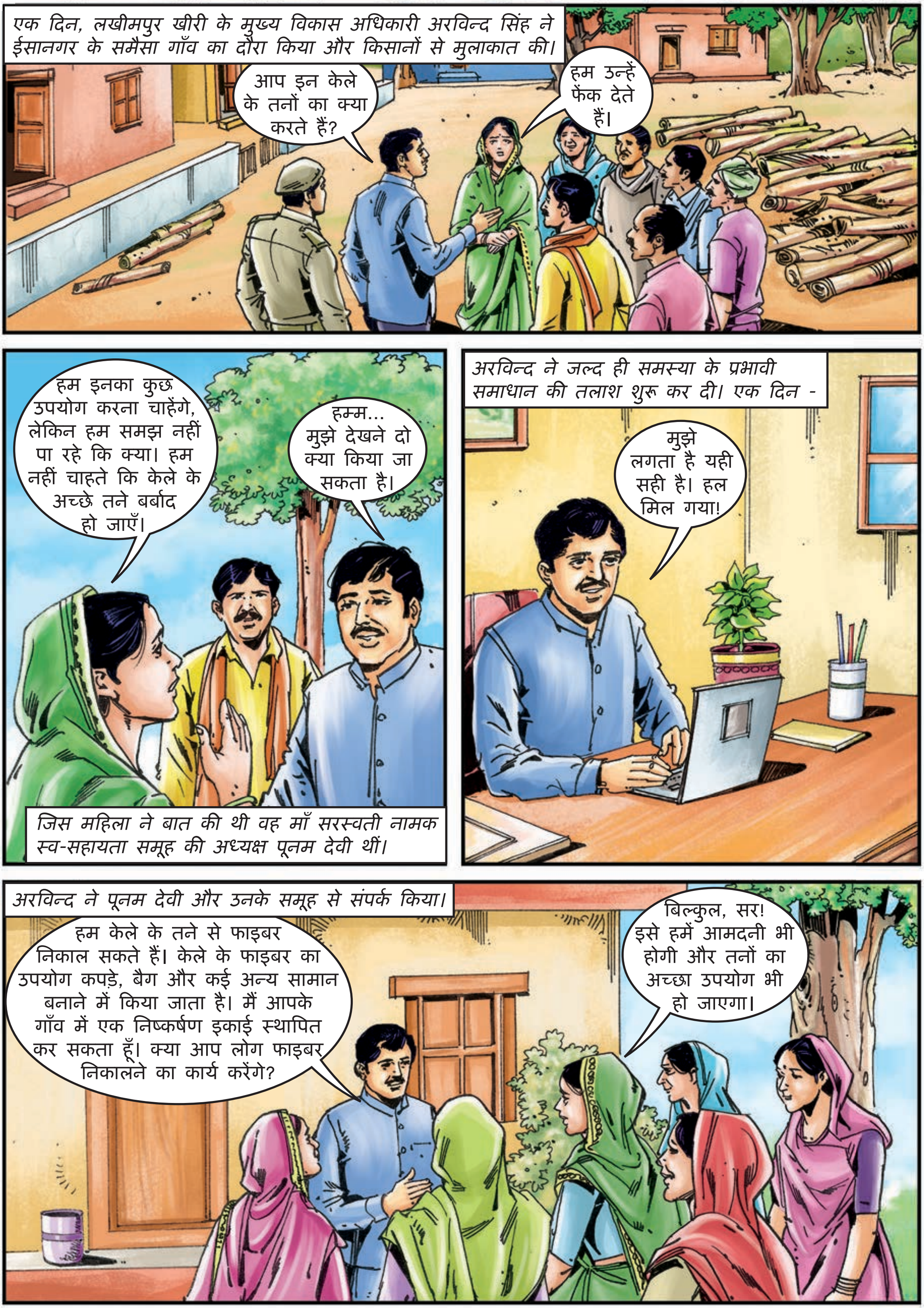
एक दिन, लखीमपुर खीरी के मुख्य विकास अधिकारी अरविन्द सिंह ने ईसानगर के समैसा गाँव का दौरा किया और किसानों से मुलाकात की।
आप इन केले के तनों का क्या करते हैं?
हम उन्हें फेंक देते हैं।
हम इनका कुछ उपयोग करना चाहेंगे, लेकिन हम समझ नहीं पा रहे कि क्या। हम नहीं चाहते कि केले के अच्छे तने बर्बाद हो जाएँ।
हम्म... मुझे देखने दो क्या किया जा सकता है।
जिस महिला ने बात की थी वह माँ सरस्वती नामक स्व-सहायता समूह की अध्यक्ष पूनम देवी थीं।
अरविन्द ने जल्द ही समस्या के प्रभावी समाधान की तलाश शुरू कर दी। एक दिन -
मुझे लगता है यही सही है। हल मिल गया!
अरविन्द ने पूनम देवी और उनके समूह से संपर्क किया।
हम केले के तने से फाइबर निकाल सकते हैं। केले के फाइबर का उपयोग कपड़े, बैग और कई अन्य सामान बनाने में किया जाता है। मैं आपके गाँव में एक निष्कर्षण इकाई स्थापित कर सकता हूँ। क्या आप लोग फाइबर निकालने का कार्य करेंगे?
बिल्कुल, सर! इसे हमें आमदनी भी होगी और तनों का अच्छा उपयोग भी हो जाएगा।

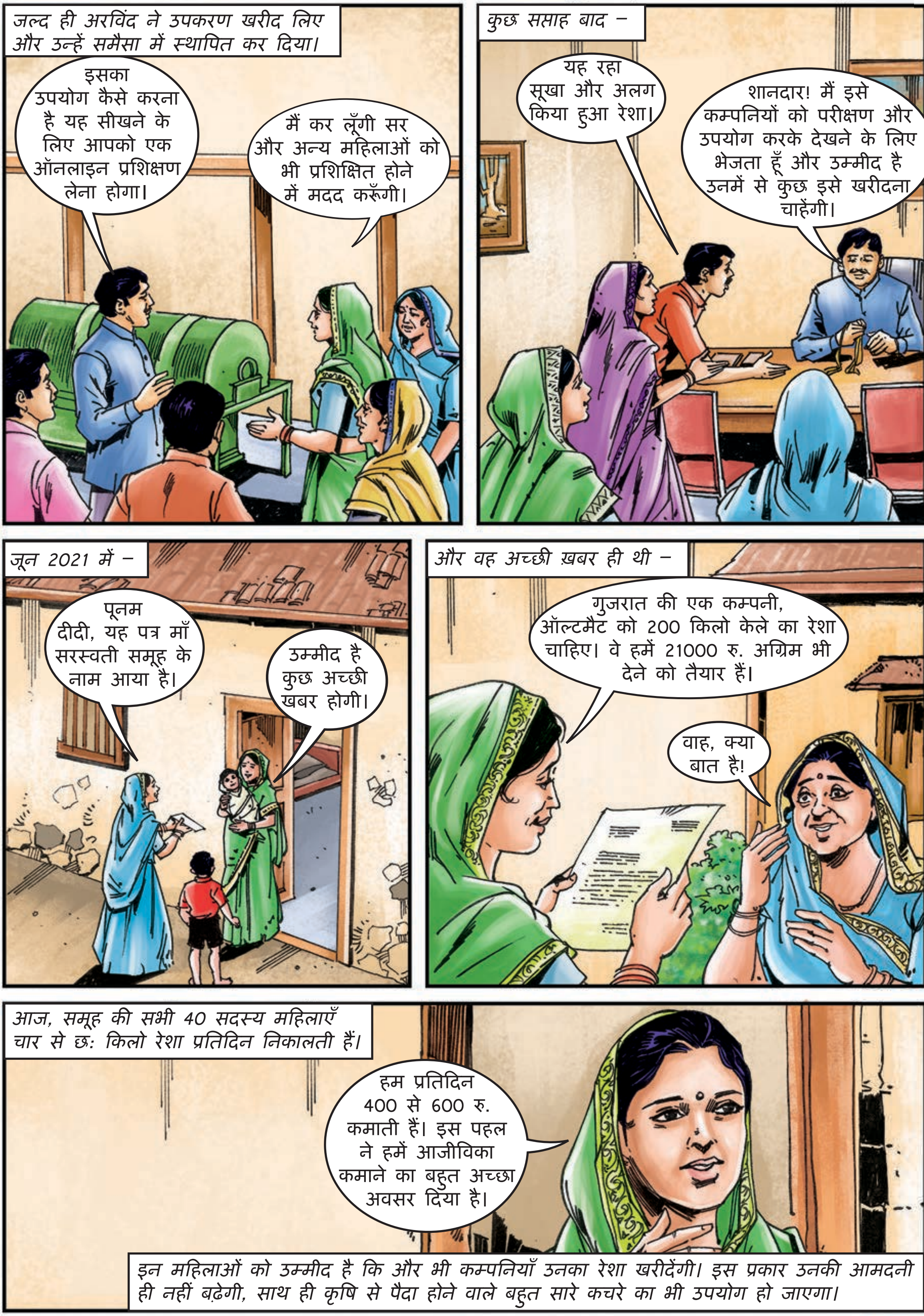
जल्द ही अरविंद ने उपकरण खरीद लिए और उन्हें समैसा में स्थापित कर दिया।
इसका उपयोग कैसे करना है यह सीखने के लिए आपको एक ऑनलाइन प्रशिक्षण लेना होगा।
मैं कर लूँगी सर और अन्य महिलाओं को भी प्रशिक्षित होने में मदद करूँगी।
कुछ सप्ताह बाद –
यह रहा सूखा और अलग किया हुआ रेशा।
शानदार! मैं इसे कम्पनियों को परीक्षण और उपयोग करके देखने के लिए भेजता हूँ और उम्मीद है उनमें से कुछ इसे खरीदना चाहेंगी।
जून 2021 में –
पूनम दीदी, यह पत्र माँ सरस्वती समूह के नाम आया है।
उम्मीद है कुछ अच्छी खबर होगी।
और वह अच्छी ख़बर ही थी –
गुजरात की एक कम्पनी, ऑल्टमैट को 200 किलो केले का रेशा चाहिए। वे हमें 21000 रु. अग्रिम भी देने को तैयार हैं।
वाह, क्या बात है!
आज, समूह की सभी 40 सदस्य महिलाएँ चार से छः किलो रेशा प्रतिदिन निकालती हैं।
हम प्रतिदिन 400 से 600 रु. कमाती हैं। इस पहल ने हमें आजीविका कमाने का बहुत अच्छा अवसर दिया है।
इन महिलाओं को उम्मीद है कि और भी कम्पनियाँ उनका रेशा खरीदेंगी। इस प्रकार उनकी आमदनी ही नहीं बढ़ेगी, साथ ही कृषि से पैदा होने वाले बहुत सारे कचरे का भी उपयोग हो जाएगा।

स्मार्टगाँव

*कैलिफ़ोर्निया, अमेरिका का शहर

^सैन होज़े का एक इनडोर क्षेत्र

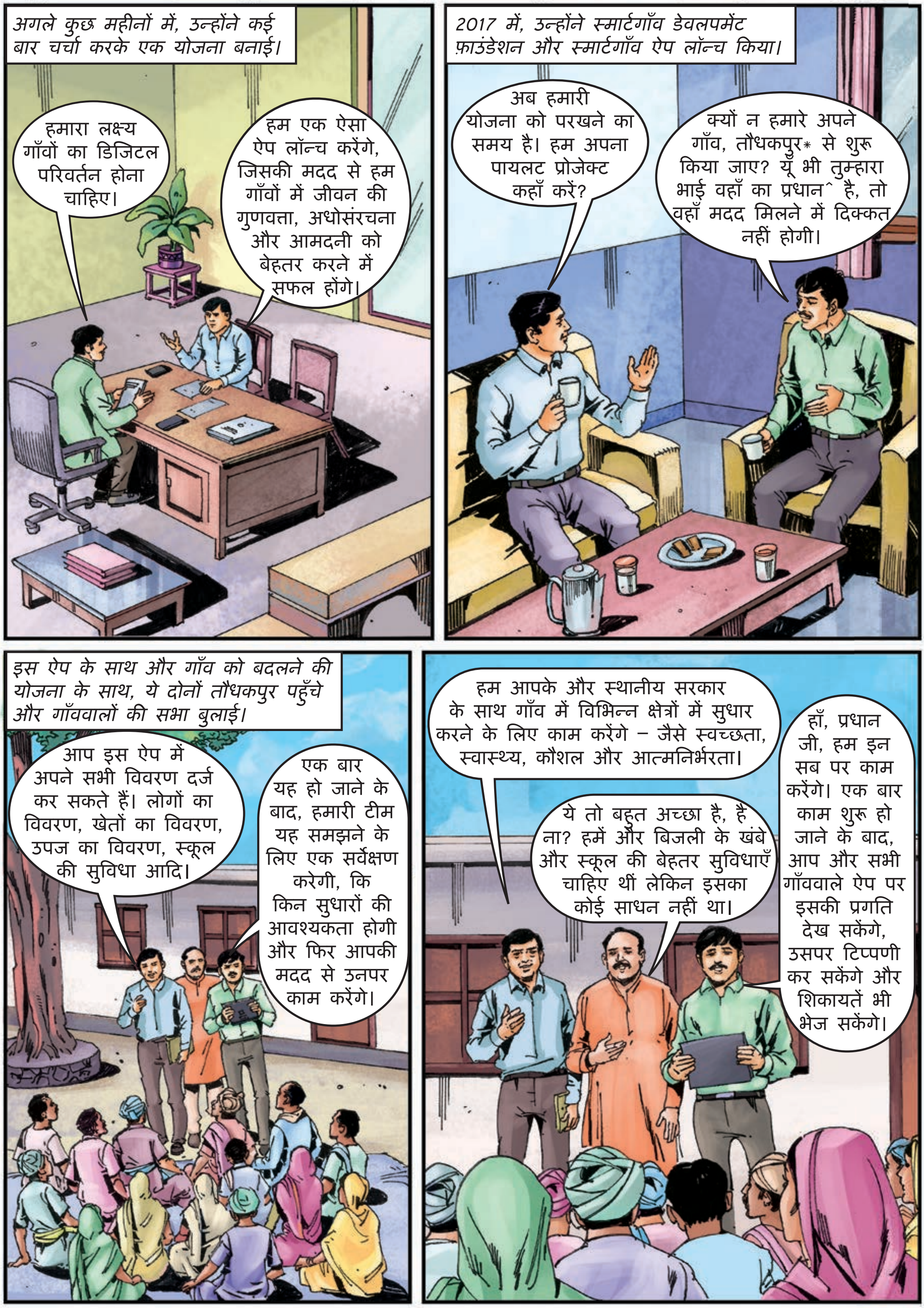

*रायबरेली ज़िला, उत्तर प्रदेश में एक गाँव

^गाँव का मुखिया

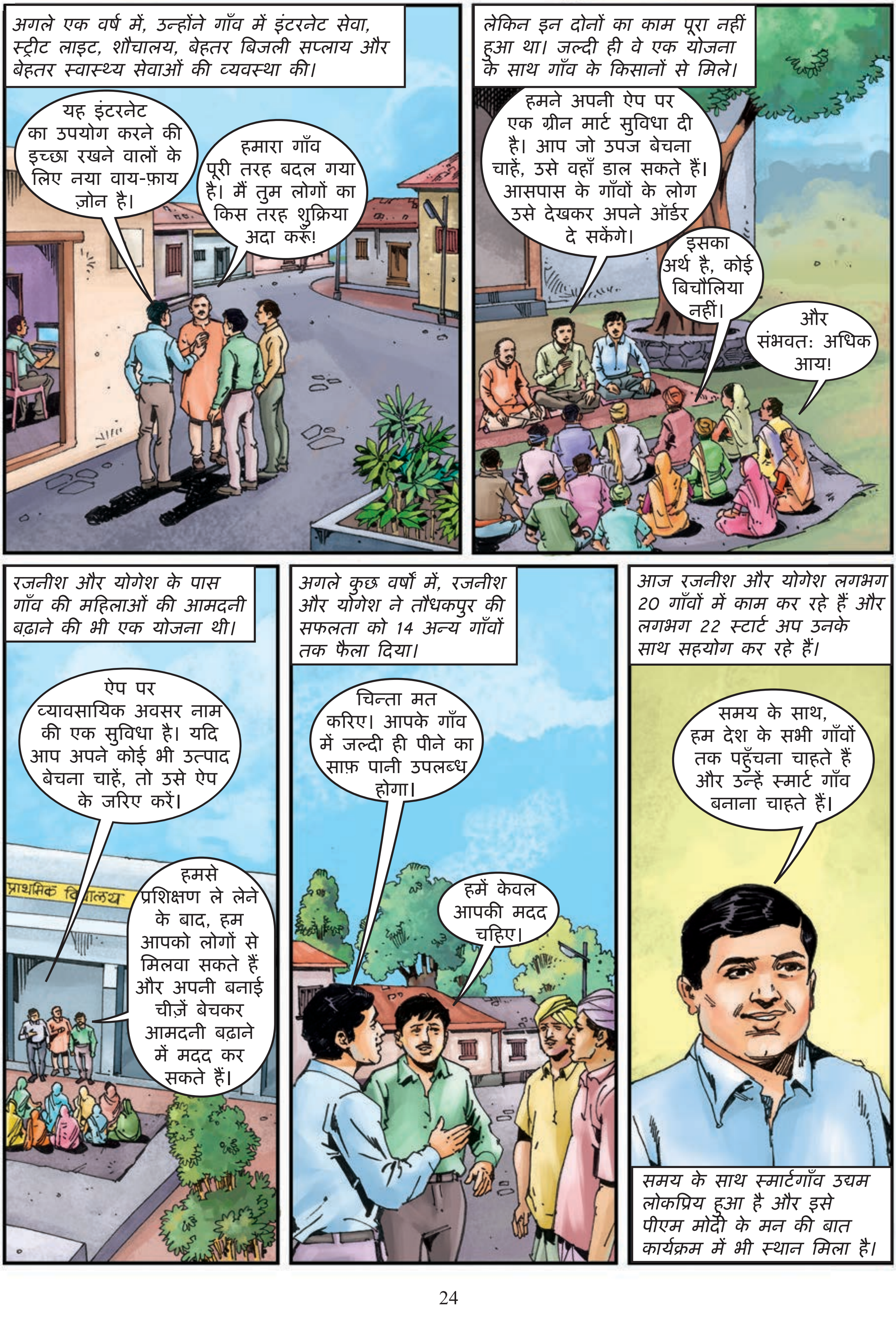

अगले एक वर्ष में, उन्होंने गाँव में इंटरनेट सेवा, स्ट्रीट लाइट, शौचालय, बेहतर बिजली सप्लाय और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की।
यह इंटरनेट का उपयोग करने की इच्छा रखने वालों के लिए नया वाय-फ़ाय ज़ोन है।
हमारा गाँव पूरी तरह बदल गया है। मैं तुम लोगों का किस तरह शुक्रिया अदा करूँ!
लेकिन इन दोनों का काम पूरा नहीं हुआ था। जल्दी ही वे एक योजना के साथ गाँव के किसानों से मिले।
हमने अपनी ऐप पर एक ग्रीन मार्ट सुविधा दी है। आप जो उपज बेचना चाहें, उसे वहाँ डाल सकते हैं। आसपास के गाँवों के लोग उसे देखकर अपने ऑर्डर दे सकेंगे।
इसका अर्थ है, कोई बिचौलिया नहीं।
और संभवत: अधिक आय!
रजनीश और योगेश के पास गाँव की महिलाओं की आमदनी बढ़ाने की भी एक योजना थी।
ऐप पर व्यावसायिक अवसर नाम की एक सुविधा है। यदि आप अपने कोई भी उत्पाद बेचना चाहें, तो उसे ऐप के जरिए करें।
प्राथमिक विद्यालय
हमसे प्रशिक्षण ले लेने के बाद, हम आपको लोगों से मिलवा सकते हैं और अपनी बनाई चीज़ें बेचकर आमदनी बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।
अगले कुछ वर्षों में, रजनीश और योगेश ने तौधकपुर की सफलता को 14 अन्य गाँवों तक फैला दिया।
चिन्ता मत करिए। आपके गाँव में जल्दी ही पीने का साफ़ पानी उपलब्ध होगा।
हमें केवल आपकी मदद चहिए।
आज रजनीश और योगेश लगभग 20 गाँवों में काम कर रहे हैं और लगभग 22 स्टार्ट अप उनके साथ सहयोग कर रहे हैं।
समय के साथ, हम देश के सभी गाँवों तक पहुँचना चाहते हैं और उन्हें स्मार्ट गाँव बनाना चाहते हैं।
समय के साथ स्मार्टगाँव उद्यम लोकप्रिय हुआ है और इसे पीएम मोदी के मन की बात कार्यक्रम में भी स्थान मिला है।

सोनाली हेल्वी

*जटिल गणनाओं को शीघ्र करने के लिए प्रयुक्त उपकरण

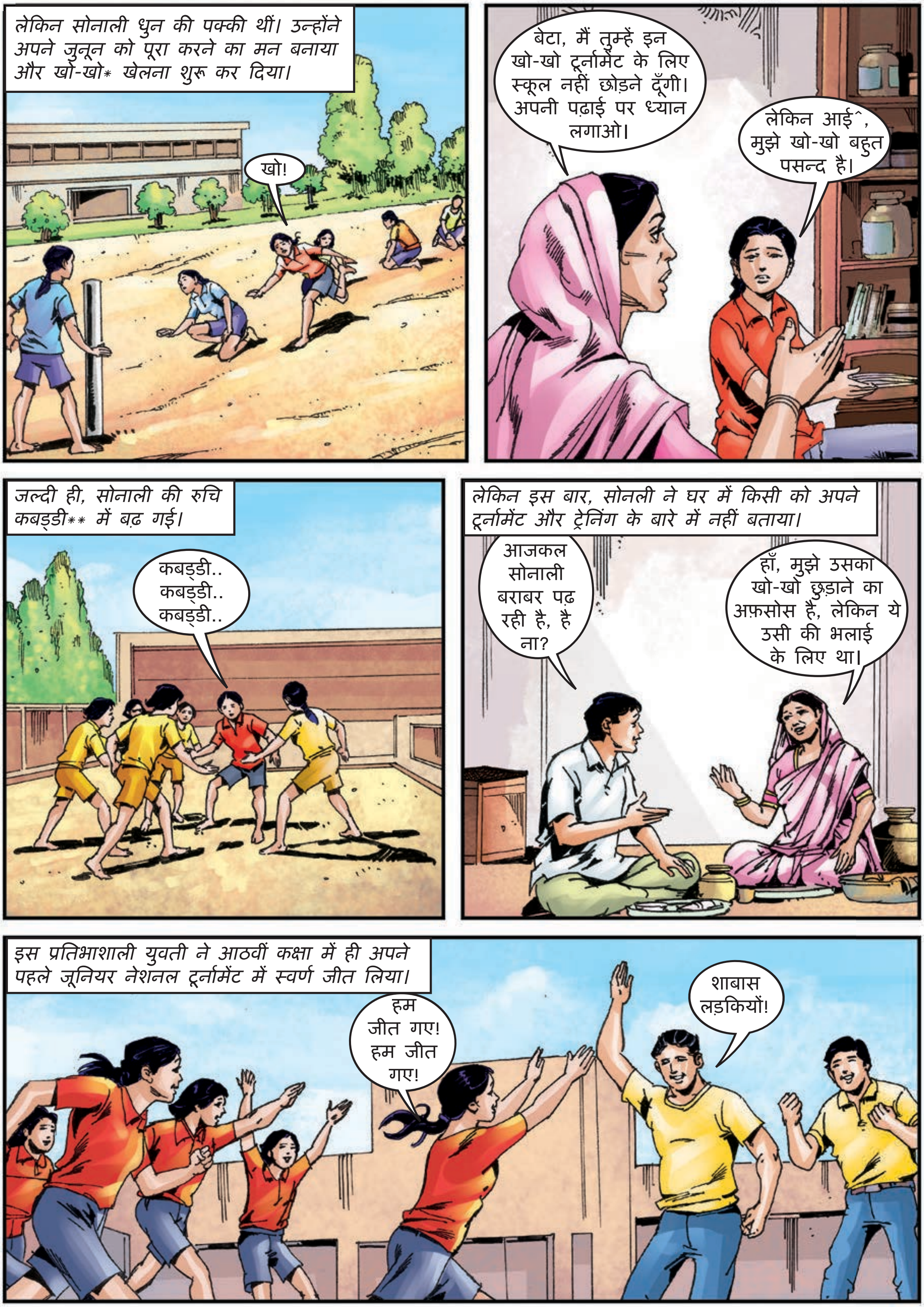

*पारम्परिक भारतीय खेल, जिसमें भागने वाले एक पंक्ति में बैठते हैं और पकड़ने वाले उन्हें दौड़ते समय पकड़ते हैं

**पारम्परिक खेल जिसमें हमला और बचाव करने वाले दो दल होते हैं

^मराठी में माँ

बड़ी जीत के बाद, सोनाली ने समझ लिया था कि अब परिवार को बताने का समय आ गया है।
देखो, आई! मुझे कबड्डी के जूनियर नेशनल में स्वर्ण पदक मिला है।
तुम कबड्डी खेल रही हो?
जूनियर नेशनल?
मुझे पता है आप दोनों चाहते हो कि मैं पढ़कर नौकरी करूँ, पर वो मेरा रास्ता नहीं है। मैं आगे भी कबड्डी खेलना चाहती हूँ।
अब तुमने अपना मन बना ही लिया है तो हम तुम्हारे रास्ते में नहीं आएँगे।
मेरी बहन बहुत ज़िद्दी है! लेकिन आज तुमने हम सबको गौरवान्वित किया है!
उस दिन से सोनाली ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।
थोड़ी कोशिश और करो सोनाली, तुम बहुत ऊँचाइयाँ छुओगी।
सोनाली ने गंभीरता से ट्रेनिंग शुरू की और 2008 में वो महाराष्ट्र की टीम की कप्तान बनीं।
आज, सोनाली को उनकी आक्रमक रेडिंग शैली और उम्दा ऑल-राउंडर होने के लिए जाना जाता है। वे अपनी शिक्षा और काम के साथ संतुलन बनाते हुए अपने जुनून को पूरा कर रही हैं।
उनके जुनून और दृढ़ संकल्प को पीएम मोदी ने अपने रेडियो शो, मन की बात में सराहा।
अपने परिवार और समुदाय से कुछ विरोध के बावजूद, सोनाली ने सिद्ध किया है कि जहाँ चाह हो, वहाँ वास्तव में राह होती है!
अब सोनाली की निगाह और ऊँचे लक्ष्यों पर है, जैसे भारत की राष्ट्रीय टीम में चयनित होना।

श्रीपति टूडू

*उस क्षेत्र की एक जनजाति, जो बांग्लादेश व नेपाल में भी पाई जाती है

^संथाली भाषा की लिपि का नाम

श्रीपति ने भारत के संविधान के बारे में सुन रखा था, लेकिन वे अब इसे पढ़ पाए, और वो भी अंग्रेज़ी में।
ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित समुदाय होने के कारण हम संथालों को अपने अधिकारों का पता होना चाहिए। संविधान में अनसूचित जनजातियों के लिए विशेष प्रावधान भी हैं! कितने शर्म की बात है कि हम इसे नहीं पढ़ सकते।
2003 में, संथाली को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता मिली। जैसे-जैसे सरकारी स्कूलों में इसे पढ़ाया जाने लगा, संथाली पाठ्यपुस्तकों की माँग धीरे-धीरे बढ़ने लगी।
श्रीपति उन कुछ शिक्षाविदों में से थे जिन्हें मौजूदा पाठ्यपुस्तकों को संथाली में अनूदित करने के लिए बोला गया था।
2019 में, वर्षों तक संथाली पढ़ाने और अनुवाद की कला में पारंगत होने के बाद, वे एक ऐसे प्रोजेक्ट के बारे में सोचने लगे, जो हमेशा से उनके दिमाग में था।
मुझे अपने लोगों के लिए संविधान तक पहुँच बनानी चाहिए। मैं उसका संथाली में अनुवाद करूँगा।
THE CONSTITUTION OF INDIA
THE CONSTITUTION OF INDIA
शीघ्र ही, कोविड-19 के लॉकडाउन ने उन्हें यह काम शुरू करने का समय मिला। उन्होंने संविधान के अंग्रेज़ी, हिन्दी और बांग्ला संस्करणों की मदद ली।
इसमें कितने जटिल शब्द हैं। ये आदि जटिल कामी* है।
बहुत सी चुनौतियाँ आईं।
लेकिन उनकी अटलता...
'दोहरी नागरिकता' और 'लोकतांत्रिक गणराज्य' के संथाली में कोई पर्यायवाची नहीं हैं। मैं उन्हें छोटे वाक्यांशों में समझा दूँगा।
A SANTHALI DICTIONARY
DICTIONARY

*बेहद जटिल काम

*हम, भारत के लोग, कृतसंकल्प होकर...'' यह प्रस्तावना का पहला वाक्य है।

युवा ब्रिगेड

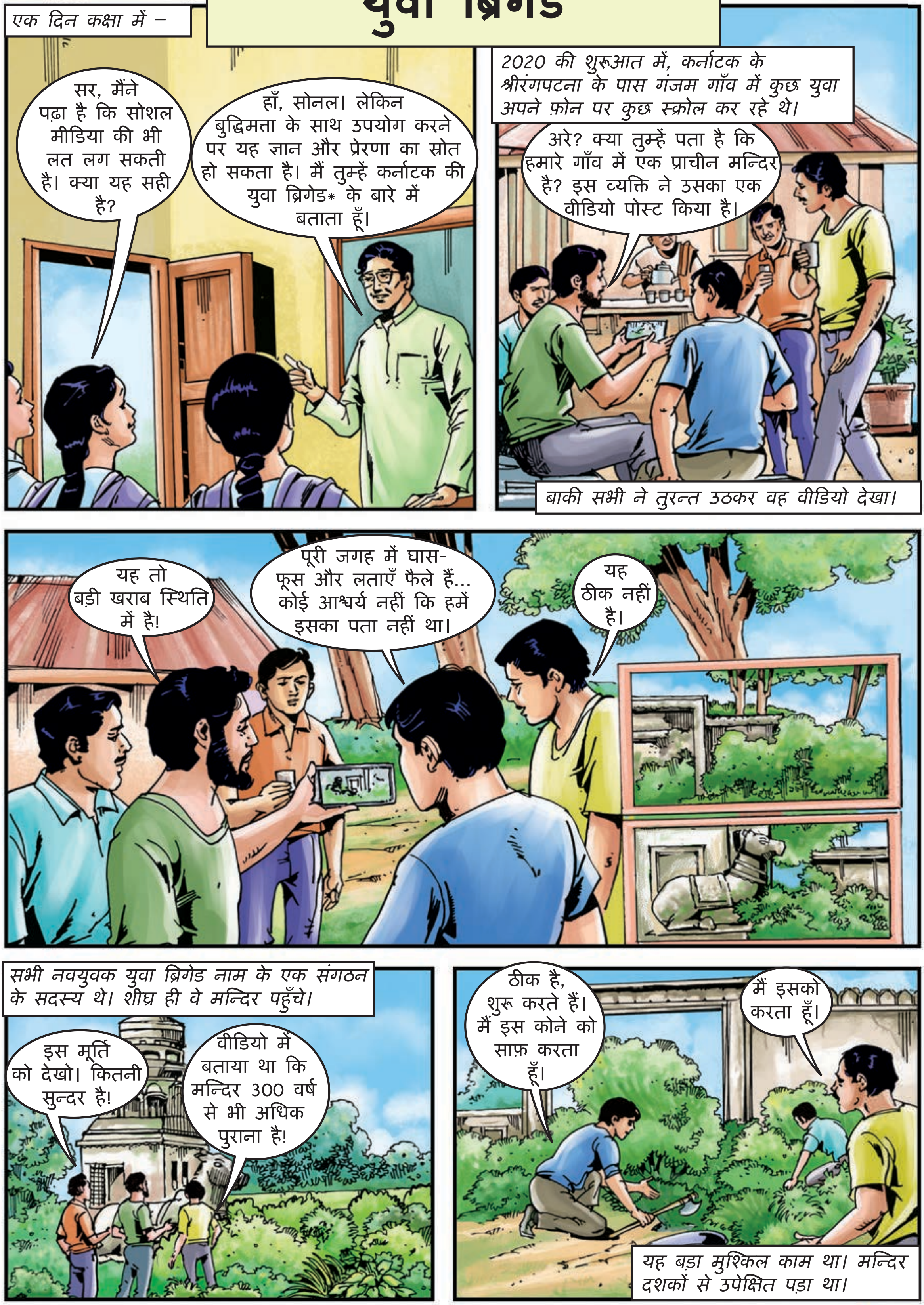

*युवा समूह

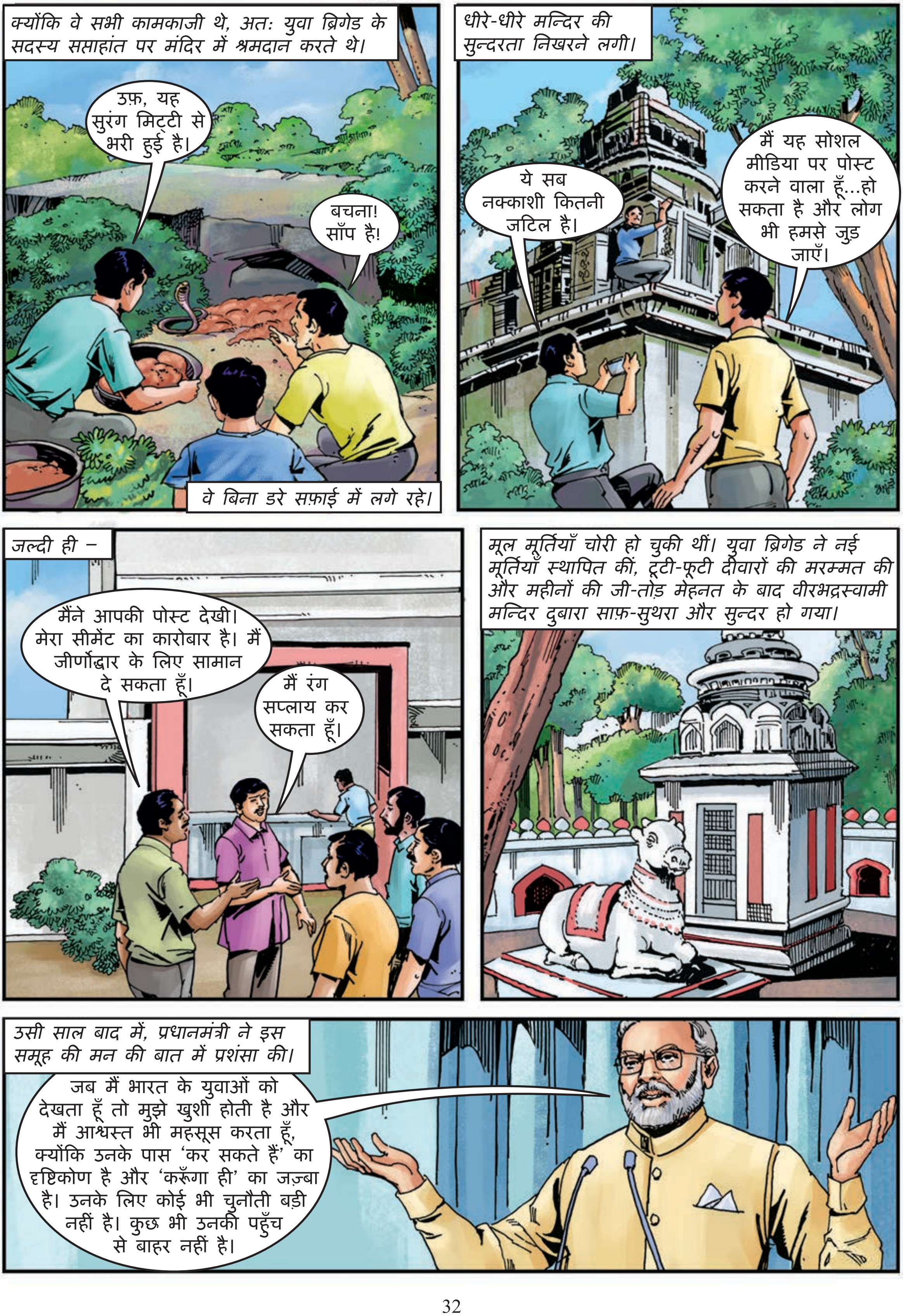
क्योंकि वे सभी कामकाजी थे, अत: युवा ब्रिगेड के सदस्य सप्ताहांत पर मंदिर में श्रमदान करते थे।
उफ़, यह सुरंग मिट्‌टी से भरी हुई है।
बचना! साँप है!
वे बिना डरे सफ़ाई में लगे रहे।
धीरे-धीरे मन्दिर की सुन्दरता निखरने लगी।
ये सब नक्काशी कितनी जटिल है।
मैं यह सोशल मीडिया पर पोस्ट करने वाला हूँ...हो सकता है और लोग भी हमसे जुड़ जाएँ।
जल्दी ही –
मैंने आपकी पोस्ट देखी। मेरा सीमेंट का कारोबार है। मैं जीर्णोद्धार के लिए सामान दे सकता हूँ।
मैं रंग सप्लाय कर सकता हूँ।
मूल मूर्तियाँ चोरी हो चुकी थीं। युवा ब्रिगेड ने नई मूर्तियाँ स्थापित कीं, टूटी-फूटी दीवारों की मरम्मत की और महीनों की जी-तोड़ मेहनत के बाद वीरभद्रस्वामी मन्दिर दुबारा साफ़-सुथरा और सुन्दर हो गया।
उसी साल बाद में, प्रधानमंत्री ने इस समूह की मन की बात में प्रशंसा की।
जब मैं भारत के युवाओं को देखता हूँ तो मुझे खुशी होती है और मैं आश्वस्त भी महसूस करता हूँ, क्योंकि उनके पास ‘कर सकते हैं’ का दृष्टिकोण है और ‘करूँगा ही’ का जज़्बा है। उनके लिए कोई भी चुनौती बड़ी नहीं है। कुछ भी उनकी पहुँच से बाहर नहीं है।

मन की बात

खंड 11

मन की बात का ग्यारहवाँ खंड, जो प्रधानमंत्री मोदी के रेडियो शो पर आधारित है, सिद्ध करता है कि जहाँ चाह, वहाँ राह।

दैतारी नाइक एक ऐसे गाँव में रहते थे जहाँ ज़मीन सूखी थी, फ़सलें मर रही थीं और पहाड़ी के पीछे पानी बहने की आवाज़ तो सुनाई देती थी किन्तु पानी दिखाई नहीं देता था। एक सुबह, वे एक सब्बल, फ़ावड़ा और अपनी हिम्मत लेकर इतिहास बनाने निकल पड़े। वर्षों बाद, पानी से भरी जीवनदायी नहर उनकी हिम्मत का जीवन्त प्रमाण प्रस्तुत करती है।

सोनाली हेल्वी ग़रीबी के बोझ तले बड़े सपनों के साथ पैदा हुईं। कबड्डी में उनकी रुचि को रिपोर्ट कार्ड और प्रवेश परीक्षाओं को सफलता का एकमात्र रास्ता मानने वाले परिवार ने हतोत्साहित किया। किन्तु सोनाली की इच्छाशक्ति मज़बूत थी। तब से उन्होंने उतने ही मैचों को मैडल में बदला है जितने संदेह करने वालों को समर्थकों में!

श्रीपति टूडू ने अपना जीवन अपनी मातृभाषा संथाली की सेवा में लगाया है। जब उन्हें पता लगा कि भारत का संविधान उनकी जनजातीय भाषा में उपलब्ध नहीं है, तो उनकी इच्छा शक्ति जाग्रत हुई। उसने महीनों तक चले मुश्किल अनुवाद के दौरान उनका साथ दिया और संथाल लोगों तक उनके अधिकारों का ज्ञान पहुँचाया।

ग्यारह प्रेरणादायी कहानियों का यह संग्रह कोशिश करने की इच्छा को भी उसी तरह प्रस्तुत करता है जिस तरह सफलता के मार्ग को।

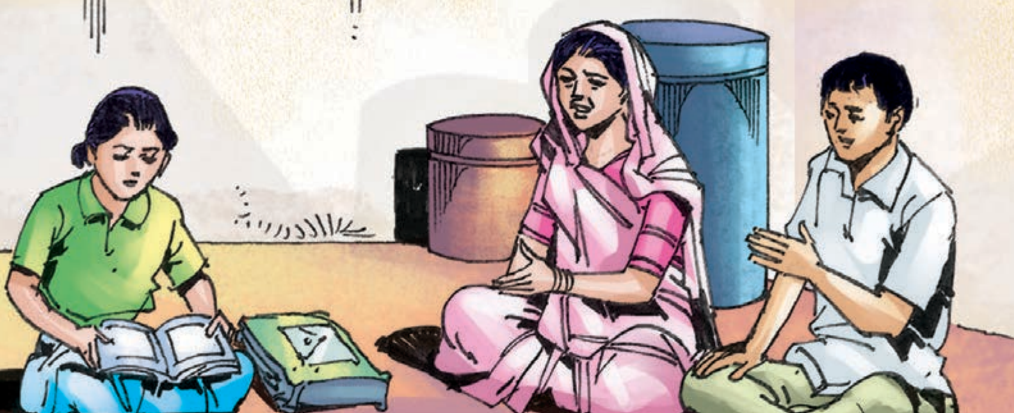

₹99

www.amarchitrakatha.com
ISBN 978-93-6127-636-1